# सर्वेश्वर श्रीसीतारामाभ्यां नमः

## महामहोपाध्याय जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरघुवराचार्य प्रसादितम्

# आचार्यमङ्गलम्

### आनन्दभाष्यसिंहासनासीन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामेश्वरानन्दाचार्य प्रणीत प्रकाश

सीतारामसमारम्भां शुकबोधायनान्विताम्। रामानन्दार्यमध्यस्थां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥

श्री सीताराम जी से आरम्भ होकर जिस परंपरा में श्री शुकदेवाचार्य जी एवं श्री बोधायन पुरुषोत्तमाचार्य जी जैसे महान आचार्य हुए हैं और जिस परंपरा के मध्य में स्वयं आनंदभाष्यकार जगद्गुरु श्री स्वामी रामानन्दाचार्य जी विराजमान हैं उस श्री संप्रदाय की गुरु परंपरा का मैं वंदन करता हूँ।

सर्वेश्वरस्य रामस्याऽवतारत्वेन बोधितः। आगमादिसु शास्त्रेषु यस्तस्याऽस्तु सुमङ्गलम्॥१॥

श्रीसम्प्रदाय- श्रीरामानन्दसम्प्रदाय के ३९वें आचार्य जगद्विजयी शतावधानी महामहोपाध्याय जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरघुवराचार्य वेदान्तकेसरी (विक्रम सम्वत १९४३-२००७) ने प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी (विक्रम सम्वत १३५६ - १५३२) के जयन्ती महोत्सव प्रसङ्ग में वाक् पुष्प पूजन समर्पण के रूप में आनन्दभाष्यकारजी के श्रीचरणों में आचार्यमङ्गलम् समर्पण किये थे जो २५ अनुष्टुप् श्लोकों का कायतः अल्प होते हुये भी तत्त्वतः महत्वपूर्ण एवं शास्त्र सारगर्भित है। यों भाषा सरल होने से भाव समझने में कोई कठिनाई नही है तो भी संस्कृत भाषा में अल्प प्रवेश वाले साधकों के सुबोध हेतु प्रकाश हिन्दी टीका द्वारा अल्प प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जा रहा है -

*'रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले'* स्वयं श्रीरामजी ही श्रीरामानन्दाचार्यजी के रूप में पृथिवी में प्रकट हुये हैं इस श्रीवैश्वानरसंहिता एवं *'आचार्या बहवोऽभूवन् राममन्त्रप्रवर्तकाः। किन्तु देवि! कलेरादौ पाखण्डप्रचूरे जने। रामानन्देति भविता विष्णुधर्मप्रवर्धकः। यदा यदा हि धर्मोऽयं विष्णोः साकेतवासिनः। कृशतामेति भो देवि! तदा स भगवान् हरिः। रामानन्दयतिर्भूत्वा तीर्थराजे च पावने। अवतीर्य जगन्नाथो धर्मं स्थापयते पुनः'* यानी भगवन शंकर ने पारवती माता से कहा - हे देवि! श्रीराम महामन्त्रराज के प्रवर्धक आचार्यगण बहुत हुये हैं किन्तु कलियुग के आदि अर्थात् कलि के ४४०० वर्ष व्यतीत होने पर तदनुसार विक्रम के १३५६वें वर्ष में पाखण्डिजनों के बहुत बढजाने पर सर्वव्यापक सनातन सर्वेश्वर श्रीरामजी ही श्रीवैष्णवधर्म के विशेष रूप से प्रवर्धक प्रचारक प्रसारक श्रीरामानन्दाचार्यजी इस नाम से विश्व विख्यात

आचार्य होंगे। क्योंकि श्रीसाकेतनिवासी श्रीसीतारामजी का यह श्रीवैष्णवधर्म जब जब ह्रास को प्राप्त कर जाता है तब तब वे ही जगत के नाथ सर्वेश्वर श्रीरामजी 'श्रीरामानन्दाचार्य' नामक यतिराज के रूप में पावन तीर्थराज प्रयाग में अवतार लेकर पुनः स्वधर्म की स्थापना करेंगे, इस आगम शास्त्र यानी श्रीवाल्मीकिसंहिता के निरूपण के अनुसार आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी सर्वेश्वर श्रीरामजी के अवतार के रूप में बोधित-निरूपित हैं ऐसे सर्वेश्वर श्रीरामजी के अवतारभूत प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यकार जगदगुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी का सर्वतोभाव से सर्वत्र मङ्गल हो ॥१॥

भूभारहरणार्थाय यथा रामोऽन्वगाद् भुवि। म्लेक्षाक्रान्ते पुनर्जाते सोऽयमागतवान् प्रभुः ॥२॥
सनातनाख्यो धर्मोऽयं श्रीवैष्णवतया भुवि। प्रसारितः पुनर्येन तस्यास्तु मङ्गलं सदा ॥३॥

दैत्यों दानवों राक्षसों के अधर्माचरणों से आक्रान्त भूमि के भार को हरण करने के लिये जैसे श्रीब्रह्मा शिवादि देवों से प्रार्थित सर्वावतारी सर्वेश्वर श्रीरामजी त्रेतायुग में भारत भूभाग में अवतरित होकर भूभारभूतजनों का शमन कर अपने प्रिय सनातन श्रीवैष्णवधर्म का संस्थापन किये पुनः अधर्म परायण म्लेच्छों से इस भारत भू के समाक्रान्त हो जाने पर सर्वसमर्थ प्रभु श्रीरामजी ही *'जब जब होइ धर्म के हानी। बाढहि विविध असुर अभिमानी। तब तब धरि प्रभु विविध शरीरा। हरहिं दयानिधि सज्जन पीरा'* इस शास्त्रीय विधान के अनुसार माघकृष्ण सप्तमी विक्रम सम्वत के १३५६ में प्रयागराज में वही करुणासागर भगवान श्री रघुनाथ जी ही यतिचक्रचूडामणि श्रीरामानन्दाचार्यजी के रूप में अवतरित हुये। वेदादि शास्त्रों में सनातनधर्म के रूप में निरूपित जो श्रीवैष्णव धर्म है उसी को पुनः सर्वजन सुलभतया परिस्कृत कर जन जन तक प्रसारित एवं प्रचारित जिन आचार्य चक्रचूडामणी जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी ने किये हैं उन आनन्दभाष्यकारजी का सदा मङ्गल हो ॥२-३॥

पुण्यसदनसत्पुत्रः पुण्यकर्मपरायणः सुशीलासाभूतस्तस्य भूयात्सुमङ्गलम्॥४॥

जो तीन प्रवर वाले वशिष्ठगोत्रीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण श्रीपुण्यसदनशर्माजी के सुपुत्र हैं सर्वदा परोपकार तथा पुण्य कर्मो में ही संलग्न रहते हैं एवं जिहोंने पतिपरायण श्रीसुशीलादेवीजी के गर्भ से अवतार धारण किया है ऐसे भारतोद्धारक आचार्य श्री का सर्वदा सर्वत्र मङ्गल हो ॥४॥

पञ्चगौडेषु विख्यातः कान्यकुब्ज इति श्रुतिः। कान्यकुब्जकुले जातो यस्तस्याऽस्तु सुमङ्गलम् ॥५॥

भारतवर्ष में ब्राह्मणों के दश प्रकार-बोधक विभाग हैं पञ्च ड्राविड-ड्राविड-तमिल आन्ध्र-तैलंग कर्णाटक महाराष्ट्र एवं गुर्जर ये प्रायः दक्षिण भारत प्रधानक हैं। पञ्चगौड -गौड सारस्वत कान्यकुब्ज मैथिल एवं उत्कल ये प्रायः उत्तर भारत प्रधानक हैं। वही पञ्चगौड ब्राह्मणों में विख्यात कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं ऐसा

*'योगिनो योगयुक्तस्य कान्यकुब्जशिरोमणेः'* श्रीअगस्त्यसंहिता १३२ आदि सद् ग्रन्थों से अवगत होता है ऐसे सर्व ब्राह्मणवर्ग शिरोमणि भूत कान्यकुब्ज ब्राह्मण कुल में समुत्पन्न जो आचार्य कुलशेखर आनंदभाष्यकार श्रीरामानन्दाचार्यजी हैं उनका सर्वतोभाव से सर्वदा मङ्गल हो ॥५॥

'रामानन्द' इतिख्यातो वशिष्ठगोत्रसम्भवः। निगमागमशास्त्रेषु तस्य भवतु मङ्गलम् ॥६॥

भारतीय वाङ्मय के आधारभूत निगम एवं आगम शास्त्रों में वशिष्ठगोत्र अति प्रसिद्ध है जो सृष्टि के आदि काल से ही श्रीब्रह्माजी के मानसपुत्र श्रीसम्प्रदाय के पाँचवें आचार्य श्रीवशिष्ठजी प्रचलित हैं उसी विश्व प्रसिद्ध वशिष्ठ गोत्र में उत्पन्न जन्म से ही *'रामानन्द'* इस प्रकार आगमादि सूचित नाम से विख्यात जो अनन्त ऐश्वर्य विभूषित आनंदभाष्यकार जगद्गुरु स्वामी श्रीरामानन्दाचार्यजी हैं उनका विश्व में सदा मङ्गल हो। श्रीसम्प्रदायीय तत्त्व प्रकाशक संहिता शास्त्र आचार्य श्री का अवतार सूचक अन्य शास्त्र या भविष्यपुराण आदि का स्वाध्याय - अध्ययन न होने से एवं शास्त्रीय तत्त्वों के ज्ञान सद्गुरुदेवों के सत्संग से वञ्चित श्रीसम्प्रदाय सम्बन्धी ज्ञान से रहित कतिपय जनों की यह धारणा गलत है कि आनन्दभाष्यकारजी का विरक्त दीक्षा से पूर्व अन्य नाम होगा। अवतारी पुरुषों के नाम अवतार निर्देशक शास्त्र ने जिस नाम से सूचित किया है वही जन्मनाम दीक्षानाम एवं कर्म नाम होता है या उसी नाम से संसार में प्रसिद्धि होती है। जगदाचार्यश्री के अवतार की सूचना *वैश्वानर संहिता अगस्त्यसंहिता श्रीवाल्मीकिसंहिता एवं भविष्यपुराण में 'रामानन्द' इसी नाम से है अतः आपका जन्म नाम 'रामानन्द' ही है*। दीक्षा शिक्षा नाम या कर्म क्षेत्र का नाम भी यही रहा है। श्री आचार्यचरण की ही संहिता शास्त्र ने एकाधिकवार 'जगद्गुरु-जगद्गुरु' लिखकर आपश्री यानी जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी के विशिष्ट कार्य कलापों का उद्बोधन किया है जो अन्याचार्यो के हेतु दृष्टिपथ से ओझल है अतः नाम विषयक तर्क कुतर्क एवं सद् गुरुदेव सेवा-संगतिहीन व्यक्ति का है।

हां प्रकृत में मननीय प्रसङ्ग तो यह कि 'रामानन्द का अर्थ या तात्पर्य क्या है जो आगमादि सभी शास्त्रों में एक स्वर से *'रामानन्द'* का उल्लेख हुआ है तो उसे अति संक्षेपतः ऐसे समझें *'राम'* में *'र'* कार के वाच्य श्रीरामजी हैं। *'आ'* कार के वाच्य श्रीसीताजी एवं *'म'* कार का वाच्य जीव है अतः *'म'* कार में वाच्य जीवात्मा *'र'* कार वाच्य श्रीरामजी का ही शेषभूत है अन्यों का नही। अपनी इच्छा के अनुरूप उपयोग किये जानेवाले को शेष कहते हैं तो इस प्रकार *'रा'* इस बीज के सर्वथा अनुसन्धान से आनन्द का अनुभव जिसे होता हो वह *'रामानन्द'* है। या *'म'* कार वाच्य जीव *'र'* कार वाच्य श्रीरामजी एवं रकार में संश्लिष्ट *'आ'* कार वाच्य श्रीसीताजी के लिये ही है अन्यों के लिये नही इस प्रकार *'रां'* बीजार्थ के अनुसन्धान से आनन्दानुभव जो करता हो उसका नाम *'रामानन्द'* है क्योंकि अगस्त्यसंहिता के *'रकारो रामचन्द्रः' स्यात् सच्चिदानन्द विग्रहः। आकारो जानकी प्रोक्ता मकारो लक्ष्मणः स्वराट्*। इस वचन के अनुसार रकार से श्रीरामजी

आकार से श्रीसीताजी एवं मकार से श्रीलक्ष्मणजी (जीवात्मा) बोधित होते हैं। अथवा *'रां'* इस बीज के सभी परम रहस्यमय अर्थ के उपदेश से श्री अनन्तानन्दाचार्य आदि द्वादश प्रधान शिष्य एवं अन्य शिष्यों को आनन्द प्रदान करने वाले को *'रामानन्द'* कहते हैं। सर्वेश्वर श्रीसीतारामजी के कैंकर्य प्राप्ति से जो परम आनन्द का अनुभव करे उसे *'रामानन्द'* कहते हैं। सर्वेश श्रीरामजी एवं सर्वकारी श्रीसीताजी के अलग अलग पुरुषाकारत्व शरणागत रक्षकत्व आदि आनन्द गुणों के अनुसन्धान से असीम आनन्द का अनुभव जिसे हो उसे 'रामानन्द' कहते हैं। अथवा *'राम'* में *र-आ-अ-म* इस स्थिति में *'र'* कार वाच्य श्रीरामजी *'आ'* कार वाच्य श्रीसीताजी *'अ'* कार संश्लिष्ट अन्य तत्त्व (प्रकृति) एवं मकार वाच्य जीवात्मावर्गों के अत्वानुसन्धान से विशिष्ट आनन्द का अनुभव जिसे हो उसे *'रामानन्द'* कहते हैं।

*'रां'* इस उपलक्षण से बोधित रहस्यत्रय षडक्षर श्रीराम महामन्त्रराज *'रां रामाय नमः'* मन्त्ररत्न *'ॐ श्रीमद्रामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये, श्रीमते रामचन्द्राय नमः'* एवं चरममन्त्र *'ॐ सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते । अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम'* के रहस्यमय विशिष्ट अर्थो के उपदेश से श्री अनन्तानन्दाचार्य प्रभृति समस्त शिष्यवर्गो को विशेष आनन्द प्रदान करने वाले को *'रामानन्द'* कहते हैं। प्रकृत विषय में थोड़ा प्रकाश अगस्त्यसंहिता के श्रीरामानन्दाचार्य जन्मोत्सव प्रकरण के प्रकाश टीका में डाला हूँ। रहस्यत्रय के तीनों महामन्त्रों की शास्त्रीय विवेचना श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर के प्रभा किरण टीकाओं में किया हूँ विशेषार्थिओं को वही देखना चाहिये ॥६॥

वेदः शुक्लः सुविख्यातोयजुरिति श्रुतौ श्रुतः। यस्यासीदार्यवर्यस्य तस्य भूयात्सुमङ्गलम् ॥७॥

जो आर्य श्रेष्ठ आचार्य चरण जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी का वेदों में विख्यात शुक्लयजुर्वेद था यानी वे शुक्लयजुर्वेदीय वाजसनेय शाखा के अध्येता थे ऐसे आचार्यश्री का सर्वदा मङ्गल हो ॥७॥

राघवानन्दाचार्येण शिक्षितोदीक्षितश्च यः। विख्याताचार्यश्रेष्ठस्य सम्भवेन्मङ्गलं सदा ॥८॥

जगद्गुरु श्रीराघवानन्दाचार्यजी ने शास्त्रीय विधान से सभी शास्त्रों की शिक्षा प्रदान की एवं श्रीवैष्णवीय नियमानुसार पञ्चसंस्कार सम्पन्न कर विरक्त चतुर्थाश्रम के हेतु शास्त्रों से विहित काषाय-भगवा वस्त्र तथा त्रिदण्ड को सविधि प्रदान-ग्रहण कराने के कारण संसार में सर्वश्रेष्ठ आचार्य के रूप में विख्यात हुये ऐसे आचार्य चूडामणि आनंदभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी का सदा मङ्गल हो ॥८॥

भावानन्दादिकाः शिष्या दण्डत्रयविभूषिताः। काषायाम्बरसंयुक्ताः सर्वलोकहितैषिणः ॥९॥
यस्यासन् भावसंपृक्ता भावाभावविभेदकाः। सत्तत्त्वबोधकाः सर्वे तस्य भवतु मङ्गलम् ॥१०॥

जिन आचार्यचक्रचूडामणिजी के श्रीभावानन्दाचार्यजी श्री अनन्तानन्दाचार्यजी प्रभृति द्वादश महाभागवत स्वरूप बारह प्रधान शिष्य थे उनमें से श्रीगालवानन्दाचार्यजी श्री अनन्तानन्दाचार्यजी एवं श्री भावानन्दाचार्यजी श्रीवैष्णवीय शास्त्र समर्थित बोधित त्रिदण्ड से विभूषित तथा श्रीवैष्णवीय धर्म शास्त्रों से विहित काषाय-भगवा वस्त्र को धारण किये थे शेष नौ विरक्ताश्रमसेवी यतियों के लिये विहित काषाय वस्त्र धारण किये थे एवं सभी शिष्य वर्ग सर्वजनों के हित साधन हेतु सदा तत्पर रहते थे तथा सभी रहस्यत्रय एवं तत्त्वत्रय आदि सत तत्त्व का जनों को बोध करानेवाले थे और सर्वेश्वर श्रीरामजी की आराधना विषयक दास्यभाव से ओतप्रोत थे तथैव भाव सम्बन्धी तत्त्व एवं अभाव सम्बन्धी तत्व को महर्षि श्रीबोधायनाभिमत श्रौतविशिष्टाद्वैत तत्व बोधन परक श्रीरामानन्द दर्शन श्रीरामानन्द वेदान्त के परिपेक्ष में विभेद अलग कर जनसमुदाय को बोध करानेवाले थे ऐसे आनंदभाष्यकार जगद्गुरु श्री स्वामी रामानन्दाचार्यजी का सदा सर्वत्र मङ्गल हो ॥१-१०॥

काषायदूषकाधानं यस्याङ्गेषु विराजते । काषायमिति विख्यातं यतीनां भूषणं वरम् ॥११॥
उत्तरीयादिवस्त्रैश्च कटिकौपिनकैस्तथा। सुशोभितं सर्वगात्रं तस्य भूयात्सुमङ्गलम् ॥१२॥

जिन यतिप्रवर के दिव्य अंग में काषाय प्रभृति गुणों के दूषण दूर करने सम्बन्धी काषाय-भगवा नाम से प्रसिद्ध आधान दिव्य वस्त्र विराजित-शोभित है जो यतियों चतुर्थाश्रमसेवी विरक्त श्रीवैष्णव संन्यासियों का सर्वश्रेष्ठ भूषण है एवं जिन आचार्य प्रवर का कापाय कटिवस्त्र तथा काषाय उत्तरीय वस्त्र एवं कौपिनादि वस्त्रों से सम्पूर्ण शरीर सुशोभित हैं ऐसे आनंदभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी का सदा सुमङ्गल हो ॥११-१२॥

तत्त्वत्रयप्रतीकं यद्दण्डत्रयेण शोभितम् । दिव्यसर्वगुणोपेतायास्तु सर्वत्र मङ्गलम् ॥१३॥

सर्वेश्वर श्रीराम तत्त्व यानी परब्रह्म श्रीरामतत्त्व सर्वेश्वरी श्रीसीता तत्त्व अर्थात् प्रकृति तत्त्व एवं जीव तत्त्व स्वरूप तीन तत्वों का प्रतीक-निदर्शक-बोधक ज्ञान कराने वाला अथवा रहस्यत्रय-ब्रह्मतारक षडक्षर श्रीराम महामन्त्र मन्त्ररत्न द्वयमन्त्र तथा चरममन्त्र रूप तीन रहस्यों का प्रतीक या कायिक वाचिक एवं मानसिक संयम स्वरूप तीन तप या आचारों का बोधक श्रीवैष्णव संन्यासियों से अनिवार्यतया धारणीय श्रीवैष्णवीय शास्त्र विहित त्रिदण्ड से शोभित एवं सम्पूर्ण दिव्य गुणों से युक्त यानी 'रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले' इस आगम वचन के प्रमाणानुसार स्वयं श्रीरामावतार होने के कारण सर्वेश्वर श्रीरामजी में विद्यमान दया दाक्षिण्य परोपकार करुणा वात्सल्य सुसमीक्षकारिता शरणागत वत्सलता प्रभृति दिव्य गुणों से ओतप्रोत आनंदभाष्यकार जगद्गुरु श्री स्वामी रामनन्दाचार्यजी का सर्वत्र मङ्गल हो ॥१३॥

ऋग्यजुः सामाख्यातानां बोधकं दण्डमुत्तमम् । दक्षिणे राजते यस्य तस्य भवतु मङ्गलम् ॥१४॥

जिन यतीश्वर के दक्षिण-दाहिने हाथ में ऋग्वेद यजुर्वेद एवं सामवेद रूप तीन तत्त्व यानी तीनों वेदों द्वारा बोधित प्रकृति जीव एवं ईश्वर स्वरूप तत्त्वों का बोधक उत्तम त्रिदण्ड सुशोभित हो रहा है उन आनंदभाष्यकार यतीन्द्रजी का सदा मङ्गल हो ॥१४॥

कायिकं वाचिकञ्चैव मानसिकमिति त्रिधा। तपः संबोधकं दण्डं तस्य भूयात्सुमङ्गलम् ॥१५॥

जिन आचार्यश्री के कर कमलों में कायिक-काय शरीर सम्बन्धी वाचिक-वाणी-बोली सम्बन्धी तथा मानसिक मन सम्बन्धी मन से होनेवाला तीन प्रकार के तपश्चर्या का बोधक ज्ञान करानेवाला त्रिदण्ड शोभित है उनका सदा मङ्गल हो ॥१५॥

दैहिकं दैविकञ्चैव भौतिकमिति विश्रुतम्। तापत्रयाणां दण्डोऽयं यस्यायं मङ्गलं सदा ॥१६॥

आचार्यश्री के दक्षिण हाथ में विराजमान जो यह त्रिदण्ड है वह दैहिक-देह शरीर सम्बन्धी ताप-क्लेश दैविक-देवता सम्बन्धी ताप क्लेश एवं भौतिक-भूत हिंसक प्राणी सम्बन्धी ताप क्लैश के रूप में विश्रुत प्रसिद्ध तापत्रय-तीनों तापों के विनाश हेतु दण्ड के समान है ऐसे त्रिदण्डधारी यतीश्वर का सदा मङ्गल हो ॥१६॥

आनन्दं राजते भाष्यं ब्रह्मसूत्रादिषु त्रिषु। बोधायनीयतत्त्वानां बोधकं वेदसम्मतम् ॥१७॥
भास्करो भासकं विश्व सर्वभाष्यार्थबोधकम्। पीठिकायां हि सौवर्णे तस्यास्तु मङ्गलं भुवि ॥१८॥

जिन भाष्यकार आचार्यचरण के आगे सुवर्ण पीठिका में चारों वेद सम्मत श्रौतविशिष्टाद्वैतमत प्रकाशन परक महर्षि श्रीबोधायनजी से अपनी ब्रह्मसूत्रवृत्ति में प्रतिपादित तत्त्वों का बोध करानेवाले ब्रह्मसूत्र उपनिषदों तथा गीता इन तीनों प्रस्थानों में आनन्द भाष्य दैदीप्यमान हो रहे हैं एवं विश्व को श्रीवैष्णवीय तात्विक तत्वों से प्रकाशित करानेवाला और ब्रह्मसूत्र उपनिषद् एवं गीता के आनन्दभाष्यों के तात्विक-रहस्यमय अर्थो का बोध करानेवाला श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर भी सौवर्ण पीठिका में सुशोभित है ऐसे प्रस्थानत्रयों के भाष्यकार तथा पूरक ग्रन्थरत्न श्रीरामार्चनपद्धति के साथ श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर के प्रणेता आचार्य श्री का संसार में सर्वदा कल्याण हो ॥१७-१८॥

रत्नसिंहासने दिव्ये सौवर्णे छत्रसंयुते। समवस्थाय श्रौतं हि विशिष्टाद्वैतबोधकम् ॥१९॥
श्रीमद्रामायणं तत्त्वं संहितादिप्रभासितम्। पुराणादिषु सर्वेषु तस्य भूयात् सुमङ्गलम् ॥२०॥

दिव्य छत्री से युक्त सुवर्णमय दिव्यरत्न सिंहासन में विराजमान होकर जनसमुदाय को श्रौतविशिष्टाद्वैत तत्वों का बोध करानेवाले तथा सभी अठारह पुराणों व उप पुराणों और संहिता - श्रीवशिष्ठसंहिता

श्रीवाल्मीकिसंहिता आदि में वर्णित सर्वेश्वर श्रीरामपरत्व बोधक रहस्यमय तत्व और श्रीमद्रामायण में महर्षि श्रीवाल्मीकिजी से प्रभासित तत्वों के बोधक - सर्व साधारण जनता को बोध करानेवाले उन आचार्य प्रवर आनंदभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी का सर्वदा सर्वत्र सुमङ्गल-कल्याण हो ॥१९-२०॥

खं नभो वेद वेद प्रमिते वर्षे कलौ युगे। यस्यावतारस्तस्यास्तु मङ्गलं सर्वदा भुवि ॥२१॥

कलियुग के चार हजार चार सौ ४४०० वर्ष व्यतीत हो जाने पर यानी विक्रमसम्वत के तेरह सौ छप्पन १३५६, माघकृष्ण सप्तमी को जिन करुणानिधान आनंदभाष्यकार जगद्गुरु श्री स्वामी रामनन्दाचार्यजी का अवतार हुआ उनका संसार में सर्वदा मङ्गल हो ॥२१॥

षडद्रिबाणवेदाख्ये गते वर्षे कलौ युगे। श्रीमद्रामनवम्यां वै साकेतमगमत् प्रभुः ॥२२॥
प्रस्थानत्रयभाष्येण धर्मं संस्थाप्य भूतले। यः सदाचार्यवर्यो हि तस्यास्तु मङ्गलं सदा ॥२३॥

जो सत् आचरणशील आचार्य श्रेष्ठ जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी प्रस्थानत्रय ब्रह्मसूत्र गीता एवं उपनिषदों में स्वनिर्मित आनन्दभाष्यों के माध्यम से वेद प्रतिपादित सनातन श्रीवैष्णवधर्म को भूतल में जन जन तक संस्थापित कर कलियुग के ४५७६ चार हजार पाँच सौ छिहत्तर वर्ष व्यतीत होने पर यानी विक्रमसम्वत के पन्द्रह सौ बत्तीस १५३२, श्रीरामनवमी के दिन एक सौ छिहत्तर वर्ष आयुष्य भोगकर सभी जीवों को श्रीरामाभिमुखी होने का उपदेश देकर सर्वसमर्थ प्रभु आनन्दभाष्यकारजी सदेह दिव्यधाम श्रीसाकेत पधारे ऐसे सर्वकर्म समर्थ आचार्यश्री का सदा मङ्गल हो ॥२२/२३॥

सर्वशास्त्रार्थवित्सोऽयं धर्मदेष्टा जगद्गुरुः। जीवदयापरो नम्रः प्रपन्नाभयदायकः ॥२४॥
'रघुवर' इति ख्यातो गुरो! ते शरणागतः। रक्ष बोधय मां पाहि शरणागतवत्सल! ॥२५॥

ये ही वे सभी शास्त्रों के वास्तविक अर्थ को जाननेवाले सनातन वैदिक श्रीवैष्णवीय धर्म का उपदेश करनेवाले जगद्गुरु हैं जो प्रपन्न-शरण में आये जीवों को अभय करदेनेवाले नम्र एवं जीवों पर दया करनेवाले हैं अतः गुरो! हे जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी। मैं 'रघुवर' इस नाम से ख्यात आपके शरण में आया हूँ हे शरणागतवत्सल। हे जगद्गुरो! मेरी रक्षा करें मुझे तात्विक तत्वों से उद्बोधित करें भवसागर तरने का एकमात्र उपाय श्रीरामतत्त्व का उपदेश प्रदानकर मेरा सर्वतोभाव से पालन करें यानी गुरुकृपाधीन श्रीरामसंमुखीभवन रूप श्रीरामसायुज्य मुक्ति है अतः आप मुझ पर दया कर श्रीरामसायुज्य प्रदान करें ॥२४-२५॥